



वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, दशा समय-आधारित एक ग्रहीय अवधि है जो जन्म कुंडली (Kundli) में विशिष्ट भावों, विषयों और कार्मिक फलों को सक्रिय करती है।

यद्यपि विंशोत्तरी दशा सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली समय-निर्धारण प्रणाली है, लेकिन 'बृहत् पराशर होरा शास्त्र' जैसे शास्त्रीय ग्रंथों में दर्जनों विभिन्न दशा प्रणालियों का उल्लेख मिलता है। इन प्रणालियों को इस आधार पर वर्गीकृत किया गया है कि वे ग्रहों (नक्षत्र-आधारित) द्वारा शासित हैं या राशियों (राशि-आधारित) द्वारा।

प्रमुख समय-निर्धारण प्रणालियाँ

- विंशोत्तरी दशा:** सार्वभौमिक 120-वर्षीय ग्रहीय चक्र (सर्वाधिक महत्वपूर्ण)।
- योगिनी दशा:** तेज़ी से घटित होने वाली घटनाओं के लिए 36-वर्षीय लघु चक्र।
- चर दशा:** जीवन के बड़े बदलावों के लिए प्रमुख राशि-आधारित प्रणाली।
- कालचक्र दशा:** अचानक आने वाले कार्मिक मोड़ों के लिए उन्नत प्रणाली।
- अष्टोत्तरी दशा:** विशिष्ट कुंडली स्थितियों में उपयोग की जाने वाली सशर्त 108-वर्षीय प्रणाली।

दशाओं के दो मुख्य वर्ग

1. ग्रह दशा (ग्रह-आधारित): किसी विशिष्ट चंद्र नक्षत्र (Nakshatra) में चंद्रमा की स्थिति से गणना की जाती है। इन प्रणालियों में, ग्रह समय की प्रमुख अवधियों पर शासन करते हैं।

2. राशि दशा (राशि-आधारित): जैमिनी ज्योतिष में लोकप्रिय। ग्रहों के स्थान पर, पूरी राशियाँ (Rashis) बारी-बारी से जीवन के विशिष्ट अध्यायों पर शासन करती हैं।

1. सर्वाधिक प्रचलित ग्रह (ग्रहीय) दशाएँ

1. विंशोत्तरी दशा (120-वर्षीय चक्र)

- प्रकार:** ग्रहीय (नक्षत्र-आधारित)
- उपयोग:** आधुनिक वैदिक ज्योतिष का सार्वभौमिक मानक। लगभग सभी जन्म कुंडलियों पर लागू होता है।
- संरचना:** चंद्रमा के जन्म नक्षत्र से शुरू होकर, 9 ग्रहों (नवग्रहों) के बीच विभाजित 120 वर्ष का कुल जीवनकाल।

2. योगिनी दशा (36-वर्षीय चक्र)

- प्रकार:** ग्रहीय / तांत्रिक
- उपयोग:** त्वरित और अत्यधिक सटीक अल्पकालिक भविष्यवाणियों के लिए पूर्वी और उत्तरी भारत (जैसे बंगाल और पंजाब) में अत्यंत लोकप्रिय।
- संरचना:** 8 दिव्य ऊर्जाओं (योगिनियों) - मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा के बीच विभाजित 36-वर्षीय चक्र।

3. अष्टोत्तरी दशा (108-वर्षीय चक्र)

- प्रकार:** ग्रहीय (सशर्त)
- उपयोग:** विशेष रूप से तब उपयोग की जाती है जब राहु लग्न (Lagna) के स्वामी से केंद्र या त्रिकोण भाव में स्थित हो, अथवा कृष्ण पक्ष में दिन के समय जन्म हुआ हो।
- संरचना:** केवल 8 ग्रहों से संबंधित एक 108-वर्षीय चक्र (केतु को शामिल नहीं किया गया है)।

2. प्रमुख राशि (राशि-आधारित) दशाएँ

1. चर दशा (जैमिनी प्रणाली)

- **प्रकार:** राशि-आधारित (Rashi)
- **उपयोग:** जैमिनी ज्योतिष की प्रमुख राशि-आधारित समय-निर्धारण प्रणाली। करियर में छलांग, स्थान परिवर्तन और जीवन के बड़े बदलावों का आकलन करने के लिए उत्कृष्ट।
- **संरचना:** प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राशि क्रम के आधार पर 12 राशियों के माध्यम से क्रमिक रूप से या उल्टे क्रम में आगे बढ़ती है।

2. कालचक्र दशा (समय का चक्र)

- **प्रकार:** मिश्रित (नक्षत्र-आधारित राशि दशा)
- **उपयोग:** महर्षि पराशर द्वारा वर्णित सबसे शक्तिशाली और जटिल प्रणालियों में से एक मानी जाती है। अचानक आने वाले बदलावों, जीवन के महत्वपूर्ण मोड़ों और स्वास्थ्य संबंधी अहम पड़ावों की भविष्यवाणी के लिए उपयोग की जाती है।
- **संरचना:** राशियों के एक क्रम को संचालित करने के लिए चंद्रमा के नक्षत्र के चरण (पाद) का उपयोग करती है।

3. नारायण दशा

- **प्रकार:** राशि-आधारित (Rashi)
- **उपयोग:** समग्र जीवन की दिशा, समृद्धि और मान-सम्मान की भविष्यवाणी के लिए सर्वश्रेष्ठ राशि-आधारित दशा मानी जाती है।
- **संरचना:** प्रथम और सातवें भाव के स्वामियों के बल के आधार पर 12 राशियों के माध्यम से चक्र लगाती है।

3. दशा के 5 उप-स्तर

ज्योतिषी चाहे किसी भी दशा प्रणाली का उपयोग करें, घटनाओं की सटीक तिथियों को निर्धारित करने के लिए समय को 5 उप-अवधियों में विभाजित किया जाता है:

- **महादशा** - प्रमुख अवधियाँ (वर्ष)
- **अंतर्दशा** - उप-अवधि (महीने)
- **प्रत्यंतर्दशा** - सूक्ष्म-उप-अवधि (सप्ताह)
- **सूक्ष्म दशा** - अति-सूक्ष्म अवधि (दिन)
- **प्राण दशा** - सटीक क्षण (घंटे)

सारांश

विंशोत्तरी दशा को अपनी दीवार पर लगी मुख्य घड़ी की तरह समझें। योगिनी या चर दशा जैसी अन्य प्रणालियाँ विशेष टाइमर के रूप में कार्य करती हैं - जब कई दशा प्रणालियाँ एक ही समय में ठीक उसी घटना की ओर संकेत करती हैं, तो वह परिणाम व्यावहारिक रूप से सुनिश्चित हो जाता है!

<https://astroarpitanath.com/hindi/types-of-dashas/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।